हिंदी महिला नाट्य लेखन में उपेक्षित स्त्री समुदाय

संतोष जे सूर्यवंशी*

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19501690

ABSTRACT

प्रस्तुत आलेख हिंदी महिला नाट्य लेखन के माध्यम से समाज के उन हाशिए पर स्थित स्त्री समुदायों की पड़ताल करता है, जिन्हें पितृसत्तात्मक इतिहास और साहित्य ने लंबे समय तक उपेक्षित रखा है। यह अध्ययन कुसुम कुमार, नादिरा जहीर बब्बर, त्रिपुरारी शर्मा और मीरा कांत जैसी नाटककारों की कृतियों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट करता है कि महिला लेखन केवल मध्यमवर्गीय समस्याओं तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें 'सकुबाई' जैसी घरेलू सहायिकाओं के अदृश्य श्रम और शिक्षा से वंचना के सवालों को प्रमुखता दी गई है। शोध यह रेखांकित करता है कि कैसे 'सुनो शेफाली' में दलित स्त्री की अस्मिता और आत्मसम्मान के स्वर मुखर हुए हैं। 'लश्कर चौक' में सांप्रदायिक पहचान के कारण 'उनका धरम भरष्ट हो गया है' कहकर बहिष्कृत की गई स्त्रियों की त्रासदी को उकेरा गया है। इसके अतिरिक्त, यह कार्य 'संस्कार को नमस्कार' के माध्यम से नारी निकेतन जैसे संस्थानों में किए जाने वाले यौन शोषण और 'नेपथ्य राग' जैसी कृतियों द्वारा विशाल पुरुष-प्रधान विद्वत समाज द्वारा मेधावी स्त्रियों की 'जिह्वा काटने' जैसे बौद्धिक दमन के ऐतिहासिक सच को उजागर करता है।

KEYWORDS: हिंदी महिला लेखन, उपेक्षित स्त्री समुदाय, अस्मिता और अस्तित्व, पितृसत्तात्मक दमन और सामाजिक-संस्थागत पाखंड।

* **संतोष जे सूर्यवंशी**, अतिथि व्याख्याता, हिंदी विभाग, बी.एल.डी.ई. संस्था, बसवेश्वर कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बसवन बागेवाड़ी.

प्रस्तावना:

हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में महिला लेखन ने पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देते हुए स्त्री अनुभव के नए क्षितिज खोले हैं। विशेष रूप से नाट्य लेखन में, महिला नाटककारों ने न केवल मध्यमवर्गीय स्त्री की घरेलू समस्याओं को मंच प्रदान किया, बल्कि उन समुदायों और वर्गों की स्त्रियों को भी मुख्यधारा के विमर्श में लाया, जिन्हें समाज, इतिहास और स्वयं साहित्य ने लंबे समय तक 'उपेक्षित' या 'अदृश्य' रखा था। कुसुम कुमार, मृदुला गर्ग, त्रिपुरारी शर्मा, नादिरा जहीर बब्बर और मीरा कांत जैसी लेखिकाओं के नाटकों का अध्ययन और विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि उनके लेखन में उपेक्षा की परतें अत्यंत गहरी और बहुआयामी हैं।

घरेलू कामगार और शहरी श्रमिक स्त्री:

शहरी ढांचे में 'घरेलू सहायिका' या 'कामवाली बाई' एक ऐसा वर्ग है जो हर घर की जरूरत है, फिर भी सामाजिक और मानवीय स्तर पर सबसे अधिक उपेक्षित है। नादिरा जहीर बब्बर का नाटक 'सकुबाई' इस दिशा में एक मील का पत्थर है। यह नाटक मुंबई के एक मध्यमवर्गीय परिवार में काम करने वाली सकुबाई के माध्यम से इस पूरे समुदाय की कथा कहता है। सकुबाई महज एक पात्र नहीं, बल्कि उस अदृश्य श्रम शक्ति का प्रतीक है जो दूसरों के घरों को संवारने में अपनी पूरी जिंदगी खपा देती है। नाटक उसके बचपन की परतों को खोलता है, जहाँ गरीबी के कारण उसकी माँ ने उसे स्कूल जाने से रोक दिया था, क्योंकि माँ कहती हैं- "तू पाठशाला जाएगी तो घर का काम कौन करेगा?"1 यह शिक्षा के अधिकार से वंचित उस बालिका का चित्रण है जो वयस्क होने तक केवल श्रम की मशीन बनकर रह जाती है।

सकुबाई के जीवन की सबसे बड़ी त्रासदी उसका शारीरिक और सामाजिक शोषण है। अपने ही सगे मामा द्वारा बलात्कार का शिकार होना और उसके बाद परिवार द्वारा ही त्याग दिया जाना, उस कड़वे सच को उजागर करता है जहाँ उपेक्षित वर्ग की स्त्री अपनों के बीच भी सुरक्षित नहीं है। इसके अलावा, नाटक उसकी बहन वासन्ती की कमाठीपुरा में आत्महत्या जैसी घटनाओं के माध्यम से यह दिखाता है कि कैसे अभाव और उपेक्षा एक स्त्री को मौत के मुहाने तक ले जाती है। हालांकि, नाटक का अंत सकारात्मक है, जहाँ सकुबाई की बेटी साइली पढ़-लिखकर और कवयित्री बनकर अपनी माँ के संघर्ष को सम्मान देती है।

दलित स्त्री और जातीय उत्पीड़न:

जाति और लिंग का गठजोड़ दलित स्त्री के दमन को दोगुना कर देता है। कुसुम कुमार का नाटक 'सुनो शेफाली' एक शिक्षित और स्वाभिमानी हरिजन लड़की शेफाली के माध्यम से दलित स्त्री की अस्मिता के जटिल सवालों को सामने लाता है। शेफाली उस 'उपेक्षित' समुदाय का प्रतिनिधित्व करती है जिसे समाज या तो घृणा की दृष्टि से देखता है या 'दया' का पात्र समझता है।

शेफाली नाटक के एक संदर्भ में कहती हैं- "मुझ पर रहम खाए कोई मुझसे शादी करे, नहीं चाहिए मुझे ऐसी शादी!"2 शेफाली का यह वाक्य उसके गहरे आत्मसम्मान को प्रकट करता है।

नाटक यह भी बेनकाब करता है कि कैसे सवर्ण राजनीतिज्ञ अपनी राजनीतिक छवि चमकाने के लिए दलित स्त्री को केवल एक मोहरा समझते हैं। जब शेफाली शादी से इनकार करती है, तो उसकी छोटी बहन किरन से शादी का प्रस्ताव रखा जाता है, जो यह दर्शाता है कि उपेक्षित वर्ग की स्त्री के निजी जज्बातों की सत्ता की नजर में कोई कीमत नहीं है।

इसी क्रम में 'लश्कर चौक' नाटक सांप्रदायिक और जातीय पहचान के कारण उपेक्षित स्त्री की बात करता है। इसमें 'ठकुराइन' कही जाने वाली महिला मानवती जब अपनी असली पहचान कमरुन्निसा के रूप में सामने आती है, तो पूरा हिंदू समुदाय उसे 'अशुद्ध' मानकर बहिष्कृत कर देता है। यहाँ तक कि एक कुलीन भिखारिन भी उसके घर की रोटी यह कहकर फेंक देती है कि "उनका धरम भरष्ट हो गया है"3

संस्थागत और सामाजिक सुरक्षा से वंचित स्त्री:

समाज के वे कोने जहाँ रक्षक ही भक्षक बन जाते हैं, वहाँ की स्त्रियां सबसे अधिक असहाय और उपेक्षित होती हैं। कुसुम कुमार का नाटक 'संस्कार को नमस्कार' नारी निकेतन जैसी संस्थाओं के भीतर चल रहे पाखंड और शोषण का पर्दाफाश करता है। आश्रम में रहने वाली विद्या, शक्ति और गंगा जैसी लड़कियाँ महज़ 'अनुदान' प्राप्त करने की कठपुतलियाँ हैं। आश्रम का संरक्षक 'संस्कारचंद' सेवा की आड़ में इन लड़कियों का यौन शोषण करता है। शक्ति जैसी भोली लड़की को "यह ताकत की दवा है! इससे बहुत ताकत आती है!"4 कहकर शराब पिलाना और उसका शोषण करना उस क्रूरता का चित्रण है जहाँ उपेक्षित स्त्री की देह और आत्मा को कुचला जाता है। यहाँ अधीक्षिका कामोबेन का व्यवहार भी यह दिखाता है कि कैसे व्यवस्था स्त्री की पीड़ा के प्रति उदासीन हो चुकी है।

इसी प्रकार, त्रिपुरारी शर्मा का नाटक 'बहू' एक युवा विधवा उमावती की उपेक्षा और संघर्ष को केंद्र में रखता है। एक रूढ़िवादी परिवार में विधवा को मनहूस माना जाता है और उसे जहर देकर मारने की कोशिश यह साबित करती है कि परिवार के भीतर भी विधवा स्त्री का अस्तित्व असुरक्षित है।

इतिहास और मिथक के 'नेपथ्य' में दबी स्त्री:

इतिहास और ज्ञान के क्षेत्र में भी पुरुषों ने हमेशा स्त्रियों की मेधा को दबाने और उन्हें हाशिए पर रखने का प्रयास किया है। मीरा कांत का नाटक 'नेपथ्य राग' इस बौद्धिक उपेक्षा का एक सशक्त उदाहरण है। यह नाटक चौथी-पाँचवीं शताब्दी की असाधारण ज्योतिषी 'खना' की कहानी पर आधारित है। खना की प्रतिभा इतनी प्रखर थी कि सम्राट विक्रमादित्य ने उसे अपनी

राजसभा में सभासद बनाना चाहा, लेकिन पुरुष-प्रधान विद्वत समाज एक स्त्री की बौद्धिक श्रेष्ठता स्वीकार नहीं कर सका। उसे चुप करने के लिए उसकी जिह्वा काटने की शर्त रखी गई-"विक्रमादित्य के नवरत्नों को सभा में जिह्वाविहीन स्त्री-सभासद चाहिए"5 यह उस शाश्वत उपेक्षा का प्रतीक है जहाँ स्त्री को शरीर के रूप में तो स्वीकार किया जा सकता है, लेकिन उसके विचारों और उसकी आवाज़ को नहीं।

त्रिपुरारी शर्मा द्वारा रचित नाटक 'सन् सत्तावन का किस्सा: अज़ीजुन निसा' इतिहास के उन बंद पन्नों को खोलता है जहाँ वीरता और देशभक्ति को केवल 'कुलीनता' की कसौटी पर कसा जाता था। इतिहास ने प्रायः 1857 के संग्राम को राजाओं, नवाबों और सामंतों के विद्रोह के रूप में दर्ज किया है। अज़ीजुन निसा एक 'तवायफ़' थी, जिसे समाज ने हमेशा 'नैतिकता' और 'मर्यादा' के नेपथ्य में रखा। नाटक इस मिथक को तोड़ता है कि राष्ट्रभक्ति केवल समाज के उच्च वर्ग की बपौती है। अज़ीजुन का पात्र यह सिद्ध करता है कि एक स्त्री जिसे समाज केवल मनोरंजन की वस्तु समझता था, वह देश की आजादी के लिए अपनी अस्मिता और प्राणों की बाज़ी लगा सकती है।

अज़ीजुन निसा जैसे पात्र इतिहास के उन गलियारों में खो गए जिन्हें मुख्यधारा के इतिहासकारों ने 'अवांछित' माना। नाटककार ने अज़ीजुन के माध्यम से उन स्त्रियों को स्वर दिया है जिन्होंने नेपथ्य में रहकर जासूसी की, रसद पहुँचाई और सैनिकों का मनोबल बढ़ाया। वह केवल एक नर्तकी नहीं, बल्कि एक रणनीतिकार के रूप में उभरती है। उसकी मेधा और साहस को दबाने के पुरुषवादी प्रयासों के बावजूद, वह अंग्रेजों के सामने झुकने के बजाय मौत को गले लगाना बेहतर समझती है। स्त्री के संदर्भ में समाज ने कुछ मिथक गढ़े हैं-जैसे 'कुलवंती' स्त्री ही पूज्य है और 'गणिका' अविश्वसनीय। यह नाटक इस मिथक को ध्वस्त करता है। जहाँ कई रियासतें अपने स्वार्थ के लिए अंग्रेजों से हाथ मिला रही थीं, वहीं अज़ीजुन जैसी 'हाशिए की स्त्री' निस्वार्थ भाव से क्रांतिकारियों का साथ देती है। नाटक का शीर्षक और विन्यास ही उसे 'किस्सा' कहता है, जो लोकस्मृति और इतिहास के बीच की कड़ी है। अज़ीजुन का संघर्ष यह दर्शाता है कि इतिहास केवल कागजों पर नहीं, बल्कि उन स्त्रियों के बलिदानों में भी जीवित है जिन्हें समाज ने कभी 'सम्मानजनक' दर्जा नहीं दिया। वह "शमशीर और घुंघरू के बीच के फासले को मिटा देती है"6 जो उसके व्यक्तित्व के विद्रोही स्वरूप को उजागर करता है।

सामाजिक और कानूनी पाबंदियों में कैद स्त्री:

नादिरा जहीर बब्बर का नाटक 'जी जैसी आपकी मर्जी' प्रतीकात्मक रूप से यह रेखांकित करता है कि सामान्य घरों में भी स्त्रियां अक्सर कठपुतलियों की भांति दूसरों की इच्छाओं पर जीने को विवश हैं। इस नाटक में चार महिला पात्रों के माध्यम से स्त्री जीवन के विभिन्न पड़ावों पर होने वाली गहरी उपेक्षा और प्रताड़ना को दर्शाया गया है। बालिका समुदाय का प्रतिनिधित्व करने

वाली दीपा के माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या के प्रयास और घर में भाई-बहन के बीच होने वाले उस भेदभाव को उजागर किया गया है, जहाँ "भैया को पानी पिला"7 जैसे आदेशों के बीच बेटियों की बुनियादी जरूरतों और यहाँ तक कि बीमारी में इलाज तक की उपेक्षा की जाती है, जिसके कारण दीपा की बड़ी बहन दुर्गा की असामयिक मृत्यु हो जाती है। तलाकशुदा और सामाजिक रूप से तिरस्कृत स्त्रियों की भयावह स्थिति सुल्ताना की कहानी में दिखती है, जिसे तीन तलाक के बाद घर से निकाल दिया जाता है और वह अत्यंत हताशा में कहती है- "काहे का शौहर? तलाक... तलाक... तलाक... ले हो गया तलाक"8

आधुनिक समाज की उपेक्षित पत्नी बबली के माध्यम से लेखिका यह स्पष्ट करती हैं कि बड़े घर, गाड़ी और नौकरों की चकाचौंध के बावजूद स्त्री भावनात्मक रूप से कितनी अकेली हो सकती है, जहाँ उसका पति नशे में धुत होकर उसके साथ शारीरिक जबरदस्ती करता है और उसे केवल एक वस्तु की तरह समझा जाता है।

उपद्रवग्रस्त और विस्थापित क्षेत्रों की स्त्री:

नादिरा जहीर बब्बर का नाटक 'ऑपरेशन क्लाउडबर्स्ट' सैन्य अभियानों और उग्रवाद की पृष्ठभूमि में आम नागरिक, विशेषकर स्त्री की यंत्रणा को अत्यंत प्रखरता से उजागर करता है। इस नाटक में असमिया महिला मोरोमी का पात्र केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि उन समस्त विस्थापित और उपेक्षित नागरिकों का चेहरा है जो सत्ता और उग्रवाद के दोहरे पाटों के बीच पिस रहे हैं। मोरोमी का यह आरोप कि "तुम लोग सब आसाम को लूटने के लिए आते हो"9 उस संचित क्रोध और अविश्वास की अभिव्यक्ति है जो दशकों की व्यवस्थागत उपेक्षा और प्राकृतिक संसाधनों के दोहन से उपजा है। वह भारतीय सेना को एक रक्षक के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसी बाहरी शक्ति के रूप में देखती है जो उनके क्षेत्र का शोषण करने आई है, जहाँ स्थानीय जनता की आवाज़ को अनसुना कर दिया जाता है।

मोरोमी की व्यक्तिगत त्रासदी व्यवस्था की क्रूरता और न्याय की विफलता का जीवंत प्रमाण है। वह सेना के जवानों के सामने वह कड़वा सच रखती है कि कैसे उसके पति को केवल शक के आधार पर हिरासत में लिया गया और उसे इतनी अमानवीय प्रताड़ना दी गई कि अंततः नशीली दवाओं के ओवरडोज के कारण उसकी मृत्यु हो गई। यह घटना दर्शाती है कि राजनीतिक संघर्षों वाले क्षेत्रों में मानवीय गरिमा कितनी सस्ती हो जाती है। मोरोमी यहाँ सेना और उग्रवादियों के बीच फंसी हुई है; जहाँ एक ओर वह उग्रवाद के कारण असुरक्षित है, वहीं दूसरी ओर सेना उसे संदेह की दृष्टि से देखती है और उसे एक जासूस मान लेती है।

हवलदार राठी द्वारा बेहोश मोरोमी के साथ छेड़छाड़ की कोशिश उस स्त्री की चरम असुरक्षा और उपेक्षा को दर्शाती है जो 'सशस्त्र क्षेत्र' में केवल एक शरीर मात्र बनकर रह जाती है। अभावों की यह कहानी मोरोमी के अपनी

बीमार बेटी मातू को लेकर जंगल में भटकने से और अधिक मर्मस्पर्शी हो जाती है। यह दृश्य इस बात का प्रतीक है कि उपद्रवग्रस्त क्षेत्रों में अस्पताल जैसी बुनियादी सुविधाएं भी आम जनता की पहुँच से बाहर हैं, जहाँ एक माँ को अपनी संतान की जान बचाने के लिए मौत के साये में सैन्य कैंपों का सहारा लेना पड़ता है। मोरोमी का पात्र यह सिद्ध करता है कि युद्ध और राजनीतिक अस्थिरता का सबसे वीभत्स रूप हाशिए पर खड़ी स्त्रियां ही झेलती हैं।

निष्कर्ष

समकालीन हिंदी महिला नाट्य लेखन ने 'स्त्री' को किसी एक बंधी-बंधाई छवि के रूप में देखने के बजाय उसकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और जातीय विविधताओं को गहराई से पहचाना है। इन नाटककारों ने 'सकुबाई' जैसी घरेलू सहायिकाओं के माध्यम से उस अदृश्य श्रम शक्ति को मंच के केंद्र में स्थापित किया है जो "पाठशाला" जाने के बजाय बचपन से ही काम की मशीन बनने को विवश हैं। 'सुनो शेफाली' और 'संस्कार को नमस्कार' जैसे नाटक जातिगत भेदभाव और 'मर्यादा' के नाम पर चलने वाले संस्थागत पाखंड का अनावरण करते हैं, जहाँ रक्षक ही भक्षक बनकर दलित और असहाय लड़कियों का यौन शोषण करते हैं। 'नेपथ्य राग' और 'अज़ीजुन निसा' के माध्यम से उन मेधावी और क्रांतिकारी स्त्रियों को इतिहास के 'नेपथ्य' से बाहर निकाला गया है, जिन्हें पुरुष-प्रधान समाज ने उनकी बौद्धिक श्रेष्ठता या सामाजिक पेशे के आधार पर 'जिह्वा काटने' जैसा दंड देकर विस्मृत कर दिया था। 'ऑपरेशन क्लाउडबर्स्ट' जैसे नाटकों ने यह रेखांकित किया है कि राजनीतिक अस्थिरता और सैन्य अभियानों का सबसे क्रूर प्रभाव विस्थापित स्थानीय स्त्रियों पर पड़ता है, जो व्यवस्था के प्रति 'अविश्वास' और प्रताड़ना झेलने को मजबूर हैं।

संदर्भ सूची:

1. बब्बर, नादिरा जहीर। सकुबाई, पृष्ठ 21
2. कुमार, कुसुम। सुनो शेफाली, पृष्ठ 339
3. कुमार, कुसुम। लश्कर चौक, पृष्ठ 441
4. कुमार, कुसुम। संस्कार को नमस्कार, पृष्ठ 219
5. कांत, मीरा। नेपथ्य राग, पृष्ठ 57
6. शर्मा, त्रिपुरारी। सन् सत्तावन का किस्सा: अज़ीजुन निसा, पृष्ठ 50
7. बब्बर, नादिरा जहीर। जी जैसी आपकी मर्जी, पृष्ठ 15
8. बब्बर, नादिरा जहीर। जी जैसी आपकी मर्जी, पृष्ठ 31
9. बब्बर, नादिरा जहीर। ऑपरेशन क्लाउडबर्स्ट, पृष्ठ 43